



मुख्यमंत्री शिक्षा गुणवत्ता अभियान 2025-26

सामाजिक अंकेक्षण हेतु प्रश्नावली

1. हाई / हायर सेकेंडरी स्तर हेतु प्रश्नावली
एवं सहायक सामग्री, संकेतक, लर्निंग आउटकम, अनुलग्नक।



स्कूल का नाम - संकुल का नाम - विकासखंड - जिला -

स्कूल डाइस कोड -

कुल दर्ज संख्या - सामाजिक अंकेक्षण में कुल उपस्थिति - सामाजिक अंकेक्षण की तिथि - / /

सामाजिक अंकेक्षण टीम प्रमुख का नाम - मोबाइल नंबर - हस्ताक्षर

सामाजिक अंकेक्षण प्रविष्टिकर्ता का नाम - मोबाइल नंबर - हस्ताक्षर

छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

मुख्यमंत्री शिक्षा गुणवत्ता अभियान 2025-26
सामाजिक अंकेक्षण (हाई / हायर सेकेंडरी स्तर) रूब्रिक्स

स.क्र.	मूल्यांकन के प्रश्न	असंतोषप्रद 🚫	औसत से कम 😞	औसत (संतोषप्रद) 😊	औसत से बेहतर 😄	उत्कृष्ट (उन्नत) 🌟
0	अंक (1 से 5)	1	2	3	4	5
1	विद्यालय का विगत तीन वर्षों का परीक्षा परिणाम क्या रहा? (सत्र -2022-23, 2023-24, 2024-25)	33-45%	46-55%	56-75%	76-90%	90-100%
	कक्षा - कक्षा 10वीं	33-45%	46-55%	56-75%	76-90%	90-100%
	विषय - विज्ञान	गणित	अंग्रेजी	हिंदी	संस्कृत	सामाजिक विज्ञान
	कक्षा - कक्षा 12वीं	33-45%	46-55%	56-75%	76-90%	90-100%
	विषय - अंग्रेजी	हिंदी %	आर्ट्स के सारे विषय % सहित	विज्ञान के सारे विषय % सहित	कॉमर्स के सारे विषय % सहित	व्यावसायिक शिक्षा के सारे विषय % सहित
(परीक्षा परिणाम का प्रमाण संलग्न करें)						
2	विद्यालय में मूलभूत सुविधा उपलब्ध है?	पक्का भवन <input type="radio"/>	पक्का भवन, विषयवार, कक्षावार, आवश्यकतानुसार समुचित कक्षा कक्ष, पेयजल, शौचालय उपलब्ध है। <input type="radio"/>	पक्का भवन, विषयवार, कक्षावार, आवश्यकतानुसार समुचित कक्षा कक्ष, पेयजल, खेल का मैदान, शौचालय उपलब्ध है। <input type="radio"/>	पक्का भवन, विषयवार, कक्षावार, आवश्यकतानुसार समुचित कक्षा कक्ष एवं प्रयोगशालाएं, पेयजल, खेल का मैदान, शौचालय उपलब्ध है। कुछ संसाधन उपयोग करने की स्थिति में है। <input type="radio"/>	पक्का भवन, विषयवार, कक्षावार, आवश्यकतानुसार समुचित कक्षा कक्ष एवं प्रयोगशालाएं, पेयजल, खेल का मैदान, आईसीटी लेब, शौचालय उपलब्ध है। सभी संसाधन उपयोग करने की स्थिति में है। <input type="radio"/>
3	21वीं सदी के कौशल (समस्या-समाधान योग्यता, तार्किक योग्यता, गणितीय सोच, सम्प्रेषण इत्यादि) बच्चों में दिखाई देते हैं। (सामान्य प्रश्नों के माध्यम से पूछें)	21वीं सदी के कौशल की जानकारी है, पर प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं। <input type="radio"/>	कुछ बच्चों 21वीं सदी के कौशल प्रदर्शित कर पाते हैं। <input type="radio"/>	अधिकांश बच्चे 21वीं सदी के कौशल प्रदर्शित कर पाते हैं। <input type="radio"/>	अधिकांश बच्चे दैनिक जीवन में 21वीं सदी के कौशल का प्रदर्शित प्रभावी रूप से कर पाते हैं। <input type="radio"/>	बच्चे स्वयं 21वीं सदी के कौशल में दक्ष हैं, और वे अन्य बच्चों को इन कौशलों में दक्ष करने हेतु प्रेरित करते हैं। <input type="radio"/>

स.क्र.	मूल्यांकन के प्रश्न	असंतोषप्रद 😡	औसत से कम 😞	औसत (संतोषप्रद) 😊	औसत से बेहतर 😄	उत्कृष्ट (उन्नत) 🌟
0	अंक (1 से 5)	1	2	3	4	5
4	क्या विद्यार्थी दिए गए गृहकार्य को पूरा करते हैं?	20 से 30 प्रतिशत विद्यार्थी गृहकार्य पूरा नहीं कर पाते हैं। <input type="radio"/>	30 से 50 प्रतिशत गृहकार्य पूरा करते हैं। <input type="radio"/>	50 से 70 प्रतिशत गृहकार्य पूरा करते हैं। शिक्षक कभी-कभी गृहकार्य का परीक्षण करते हैं। <input type="radio"/>	सभी विद्यार्थी एक-दूसरे के सहयोग से गृहकार्य पूरा करते हैं। शिक्षक गृहकार्य का परीक्षण करते हैं। <input type="radio"/>	सभी विद्यार्थी स्वयं एवं विभिन्न साधनों (डिजिटल प्लेटफार्म आदि) का उपयोग करते हुए गृहकार्य पूरा करते हैं। शिक्षक गृहकार्य पर क्रेडिट देते हैं। <input type="radio"/>
5	क्या विद्यार्थी सीखने-सीखाने में Peer learning/ Group learning का उपयोग करते हैं?	विद्यार्थी Peer learning/ Group learning में रुचि प्रदर्शित करते हैं। <input type="radio"/>	कुछ विद्यार्थी Peer learning/ Group learning का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	अधिकांश विद्यार्थी Peer learning/ Group learning का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	सभी विद्यार्थी Peer learning/ Group learning का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	सभी विद्यार्थी कक्षा एवं कक्षा के बाहर भी Peer learning/ Group learning का उपयोग करते हैं, और दूसरे विद्यार्थी को भी प्रेरित करते हैं। <input type="radio"/>
6	क्या विद्यार्थी प्रयोगशाला (विज्ञान, भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान इत्यादि) के उपकरणों/मॉडल/TLM का उपयोग करते हैं?	विज्ञान विषय में ही प्रयोगशाला एवं TLM का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	प्रयोगशाला एवं TLM का कालखण्ड के अनुसार उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	प्रयोगशाला TLM और मॉडल का कालखण्ड के अनुसार उपयोग करते हैं। प्रदर्शनी का आयोजन करते हैं। <input type="radio"/>	सभी विषयों में TLM मॉडल प्रोजेक्ट/प्रयोगशाला कार्य हेतु उपयोग करते हैं। विद्यार्थियों को TLM निर्माण हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है। <input type="radio"/>	प्रयोगशाला के माध्यम से नवीन अवधारणाओं की समझ कर एवं स्वयं TLM/ मॉडल का निर्माण कर पाते हैं। <input type="radio"/>
7	1.क्या विद्यार्थियों के द्वारा अटल टिकरिंग लेब का उपयोग किया जाता है? (जिस विद्यालय में अटल टिकरिंग लेब है उसी में लागू)	लैब का उपयोग न्यूनतम करते हैं। <input type="radio"/>	कुछ विद्यार्थी लैब का उपयोग कभी-कभी करते हैं। <input type="radio"/>	लैब का उपयोग सप्ताह में दो दिन करते हैं। AI से संबंधित जानकारी देते हैं, प्रदर्शन करते हैं। <input type="radio"/>	लैब का उपयोग सप्ताह में तीन दिन आधा-आधा घंटा करते हैं। विद्यार्थी लैब में समूह में कार्य करते हैं। <input type="radio"/>	विद्यार्थी लैब के उपकरणों का उपयोग मॉडल/प्रोजेक्ट के निर्माण में कर पाते हैं। अपने समुदाय में इसके उपयोग के बारे में प्रचार करते हैं। AI से नवाचार करने के रुचि रखते हैं। <input type="radio"/>
अथवा						
	2. क्या विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की जाती है?	सहभागिता विद्यालय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	विकासखंड स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	जिला स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राज्य स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राष्ट्रीय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>
8	क्या कला उत्सव में विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की जाती है?	सहभागिता विद्यालय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	विकासखंड स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	जिला स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राज्य स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राष्ट्रीय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>

स.क्र.	मूल्यांकन के प्रश्न	असंतोषप्रद 😡	औसत से कम 😞	औसत (संतोषप्रद) 😊	औसत से बेहतर 😄	उत्कृष्ट (उन्नत) 😁
0	अंक (1 से 5)	1	2	3	4	5
9	क्या क्रीडा प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की जाती है?	सहभागिता विद्यालय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	विकासखंड स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	जिला स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राज्य स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राष्ट्रीय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>
10	क्या योग प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की जाती है?	सहभागिता विद्यालय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	विकासखंड स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	जिला स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राज्य स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>	राष्ट्रीय स्तर पर रहती है। <input type="radio"/>
11	क्या विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम विधियाँ जैसे - गतिविधियाँ आधारित/डिजिटल /अनुभवात्मक विधि इत्यादि से पढ़ाया जाता है?	इन विधियों का सीमित उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	कुछ विषयों के अध्यापन में पाठ्यपुस्तक आधारित गतिविधि आधारित शिक्षण होता है। <input type="radio"/>	यदा-कदा गतिविधि आधारित/ डिजिटल /अनुभवात्मक विधियों का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	गतिविधि आधारित/डिजिटल/ अनुभवात्मक विधियों का प्रायः प्रयोग करते हैं। <input type="radio"/>	नवाचारी विधियों का समस्त स्तरों पर प्रतिदिवस की कक्षा में उपयोग किया जाता है। विधियों का उपयोग विषयानुकूल होता है। <input type="radio"/>
12	विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा guest lecture (अतिथि व्याख्यान) कराएँ जाते हैं।	केवल अकादमिक विषयों पर व्याख्यान कराएँ जाते हैं। <input type="radio"/>	अकादमिक एवं व्यावसायिक विषयों पर व्याख्यान कराएँ जाते हैं। <input type="radio"/>	कॅरियर गाइडेंस, सेकेंडरी स्तर पर विषय चयन, जीवन कौशल, व्यावसायिक शिक्षा पर कराया जाता है। <input type="radio"/>	कॅरियर गाइडेंस विषयवार और उनके संबंधित रोजगार एवं व्यवसाय तथा उद्यमिता पर व्याख्यान / विडियो इत्यादि दिखाएँ जाते हैं। <input type="radio"/>	भारतीय ज्ञान परंपरा, प्रेरणास्पद, व्यक्तित्व, कॅरियर गाइडेंस, सेकेंडरी स्तर पर विषय चयन, जीवन कौशल, व्यावसायिक विषयों पर व्याख्यान कराए जाते हैं। स्थल भ्रमण भी करवाएँ जाते हैं। <input type="radio"/>
13	क्या शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को कैरियर कॉउंसलिंग/शैक्षिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है? (अभियोग्यता आधारित- Aptitude Based)	शिक्षकों के द्वारा यदा-कदा व्यक्तिगत परामर्श दिया जाता है। <input type="radio"/>	शिक्षकों के द्वारा विषय चयन के लिए मार्गदर्शन दिया जाता है। (12वीं के बाद कॅरियर संबंधित जानकारी दी जाती है।) <input type="radio"/>	शिक्षकों के द्वारा नियमित अंतराल में कॅरियर कॉउंसलिंग एवं शैक्षिक मार्गदर्शन दिया जाता है। <input type="radio"/>	विशेषज्ञ द्वारा कॅरियर कॉउंसलिंग एवं रुचि आधारित टेस्ट करवाया जाता है। <input type="radio"/>	शिक्षक काउंसलर / विशेषज्ञ के द्वारा कॅरियर कॉउंसलिंग, व्यक्तिगत कॉउंसलिंग, शैक्षिक कॉउंसलिंग करायी जाती है। विद्यार्थी अपनी पसंद के विषय एवं कॅरियर के बारे में विस्तृत चर्चा कर सकते हैं। <input type="radio"/>

स.क्र.	मूल्यांकन के प्रश्न	असंतोषप्रद 😡	औसत से कम 😞	औसत (संतोषप्रद) 😊	औसत से बेहतर 😄	उत्कृष्ट (उन्नत) 😍
0	अंक (1 से 5)	1	2	3	4	5
14	क्या विद्यार्थी सीखने हेतु ऑनलाईन शैक्षिक प्लेटफार्म जैसे - ई-लर्निंग, गूगल, ई-विद्या, दीक्षा, अमृता, आदि का उपयोग करते हैं?	विद्यार्थी सीखने हेतु ई-विद्या, पाठ्यपुस्तकों में QR code आदि का ज्ञान रखते हैं। <input type="radio"/>	कुछ विद्यार्थी सीखने हेतु ई-विद्या, ऑनलाईन शैक्षिक प्लेटफार्म जैसे - ई-लर्निंग, गूगल का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	अधिकांश विद्यार्थी सीखने हेतु ई-विद्या, दीक्षा, आदि का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	विद्यार्थी सीखने हेतु ई-विद्या, दीक्षा, अमृता आदि का उपयोग करते हैं, जिससे उसके पढ़ाई के स्तर में सुधार दिखता है। साथ ही अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरित करते हैं। <input type="radio"/>	विद्यार्थी अन्य बच्चों की मदद हेतु ऑनलाईन शैक्षिक प्लेटफार्म में ई-कॉन्टेंट विकसित कर पाते हैं। समय-समय पर ई-कॉन्टेंट पर आवश्यक चर्चा में शामिल होते हैं। <input type="radio"/>
15	क्या विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं?	विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग न्यूनतम करते हैं। पुस्तकालय में पर्याप्त संदर्भ ग्रंथ नहीं है। <input type="radio"/>	कुछ विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। विद्यालय के पुस्तकालय में पर्याप्त संदर्भ ग्रंथ है। <input type="radio"/>	अधिकांश विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	पुस्तकालय के उपयोग के लिए कालखंड उपलब्ध हैं जिसमें बच्चे नियमित रूप से पुस्तक पढ़ते हैं एवं पंजी संधारित की जाती है। <input type="radio"/>	पुस्तकालय से पुस्तक ले जाकर पढ़ते हैं एवं पंजी संधारित की जाती है। प्रत्येक माह अधिकतम पुस्तक पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करते हैं। <input type="radio"/>
16	शाला सुरक्षा/सड़क सुरक्षा/आत्मरक्षा इत्यादि के संबंध में शिक्षकों से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त होता है?	केवल आत्मरक्षा की जानकारी रखते हैं। <input type="radio"/>	आत्मरक्षा एवं शाला सुरक्षा का ज्ञान रखते हैं। <input type="radio"/>	आत्मरक्षा, शाला सुरक्षा, सड़क सुरक्षा का अभ्यास करवाया जाता है। <input type="radio"/>	सायबर सुरक्षा, आत्मरक्षा, शाला सुरक्षा, सड़क सुरक्षा पर अभ्यास एवं मॉक ड्रिल दिखाया जाता है। <input type="radio"/>	उपरोक्त सभी के साथ-साथ आपात परिस्थितियों के लिए मॉकड्रिल कराया जाता है। उत्कृष्ट कार्य को सम्मानित किया जाता है। <input type="radio"/>
17	क्या शाला में इको क्लब एवं यूथ क्लब संचालित है?	विद्यालय में इको क्लब एवं यूथ क्लब का गठन किया गया है। <input type="radio"/>	विद्यालय में इको क्लब एवं यूथ क्लब पंजीकृत है। <input type="radio"/>	इको क्लब एवं यूथ क्लब विद्यालय परिसर में क्रियाशील है जैसे - वृक्षारोपण, बाल संसद आदि। <input type="radio"/>	इको क्लब एवं यूथ क्लब योजना बनाकर विद्यालय में कार्य किया जाता है, पौधों का "QR code" जनरेट किया जाता है। <input type="radio"/>	विद्यालय में इको क्लब के अंतर्गत एक पेड़ माँ के नाम पर लगाया जाता है। जिला एवं राज्य स्तर पर इन क्लबों की गतिविधियों में प्रतिभागिता रहती है। <input type="radio"/>

स.क्र.	मूल्यांकन के प्रश्न	असंतोषप्रद 😡	औसत से कम 😞	औसत (संतोषप्रद) 😊	औसत से बेहतर 😄	उत्कृष्ट (उन्नत) 🌟
0	अंक (1 से 5)	1	2	3	4	5
18	वार्षिक शैक्षिक कैलेण्डर के अनुसार पाठ्यक्रम की पूर्णता पश्चात् लर्निंग आउटकम पर आधारित संबंधित विषय शिक्षक द्वारा आकलन किया जाता है।	नियमित परीक्षाओं के अतिरिक्त आकलन नहीं किया जाता है। <input type="radio"/>	छ:माही पाठ्यक्रम पूर्ण होने के उपरांत ही आकलन किया जाता है। कक्षा में सतत मूल्यांकन नहीं किया जाता है। <input type="radio"/>	कुछ ही पाठ मूल्यांकन में शामिल किये जाते हैं। <input type="radio"/>	प्रत्येक पाठ पूर्ण होने के बाद आकलन किया जाता है। दक्षता आधारित प्रश्न पत्रों पर अभ्यास करवाया जाता है। <input type="radio"/>	प्रत्येक पाठ पूर्ण होने के बाद आकलन किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार उपचारात्मक शिक्षण दिया जाता है। शिक्षक एवं विद्यार्थी दक्षता आधारित आकलन को समझते हैं और उस पर कार्य कर सकते हैं। <input type="radio"/>
19	विद्यार्थी विद्यालय में उपलब्ध खेल और क्रीडा सामग्री का पर्याप्त उपयोग करते हैं?	क्रीडा सामग्री का बिल्कुल उपयोग नहीं करते हैं। <input type="radio"/>	बहुत कम विद्यार्थी या बहुत ही कम बार क्रीडा सामग्री का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	केवल क्रीडा प्रतियोगिता में उपयोग होता है। <input type="radio"/>	अधिकांश विद्यार्थी नियमित रूप से खेल उपकरणों का उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>	लगभग सभी विद्यार्थी खेल सामग्री का नियमित और पूर्ण उपयोग करते हैं। <input type="radio"/>
20	विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी हेतु गत वर्षों में प्रश्न पत्र हल करना/पुनरावृत्ति/उपचारात्मक शिक्षा आदि कराया जाता है? प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है?	केवल पुनरावृत्ति करायी जाती है। <input type="radio"/>	पुनरावृत्ति एवं पूर्व वर्ष के प्रश्न पत्रों पर अभ्यास कराया जाता है। <input type="radio"/>	पूर्व वर्ष के प्रश्न-पत्रों के पुनरावृत्ति के साथ-साथ निदानात्मक परीक्षण किया जाता है। कक्षा में कभी-कभी मूल्यांकन किया जाता है। <input type="radio"/>	पूर्व वर्ष के प्रश्न-पत्रों के पुनरावृत्ति के साथ-साथ निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है। कक्षा शिक्षण के दौरान सतत मूल्यांकन किया जाता है। दक्षता आधारित प्रश्न मूल्यांकन में शामिल किए जाते हैं। <input type="radio"/>	पूर्व वर्ष के प्रश्न-पत्रों के पुनरावृत्ति के साथ-साथ निदानात्मक परीक्षण के साथ-साथ उपचारात्मक शिक्षण के पश्चात् पुनः कमियों का चिन्हांकन कर सुधारात्मक उपाय किए जाते हैं। सतत मूल्यांकन के लिए ग्रेड दिए जाते हैं और उसका रिकार्ड रखा जाता है। दक्षता आधारित प्रश्नों पर अभ्यास करवाया जाता है। <input type="radio"/>

शिक्षक से संबंधित बिंदु:- सेकेण्डरी स्तर

संकेतक	सेकेण्डरी स्तर
प्रश्न क्रमांक 03 के लिए	21वीं सदी के कौशल:
	1. क्या आप विषयगत प्रश्नों का हल करते समय समस्या समाधान योग्यता का उपयोग करते हैं?
	2. क्या आप विषयगत प्रश्नों का हल करते समय तार्किक योग्यता का उपयोग करते हैं?
	3. क्या आप गणितीय प्रश्नों का हल करते समय गणितीय सोच का उपयोग करते हैं?
	4. क्या कक्षा कक्ष में आप संप्रेषण कौशल के माध्यम से प्रभावित समूह अधिगम पढ़ते हैं?
	5. क्या समस्त विषयों को सीखने के दौरान 21वीं सदी के कौशलों का समग्र उपयोग कर पाते हैं?
प्रश्न क्रमांक 04 के लिए	गृह कार्य:
	1. क्या आपको प्रतिदिन गृहकार्य दिया जाता है?
	2. क्या आपको सभी विषयों में गृहकार्य दिया जाता है?
	3. क्या आप गृहकार्य स्वयं पूरा करते हैं?
	4. क्या आप गृहकार्य पूरा करने के लिए किसी की मदद लेते हैं?
	5. क्या शिक्षको द्वारा गृहकार्य की जाँच की जाती है?
प्रश्न क्रमांक 5 के लिए	पीयर लर्निंग/ ग्रुप लर्निंग:
	1. क्या आप अपनी पढ़ाई में अपने मित्र की सहायता लेते हैं?
	2. किन-किन विषयों में आपको अकेले की तुलना में जोड़ी (पीयर लर्निंग)/समूह (ग्रुप लर्निंग) में पढ़ाई करना ज्यादा सरल लगता है?
	3. क्या आप अपने सभी विषयों की पढ़ाई में अपने मित्र को सहभागी बनाते हैं?
	4. जोड़ी/ समूह बनाकर पढ़ाई करते समय आपको किस में ज्यादा आनंद आता है - मित्र को पढ़ाने में या मित्र से पढ़ने में?
	5. समूह अध्ययन के दौरान आपने कितनी बार समूह का नेतृत्व किया है?
प्रश्न क्रमांक 6 के लिए	प्रयोगशाला / TLM / शैक्षणिक मॉडल:
	1. क्या विज्ञान विषय के अध्यापन के दौरान शिक्षक प्रयोगशाला का उपयोग करते हैं?
	2. क्या विषयों का अध्यापन शिक्षक TLM (शिक्षण सामग्री) की सहायता से करते हैं?
	3. क्या विज्ञान का अध्यापन करते समय शिक्षक प्रयोगशाला के उपकरणों को दिखाकर प्रयोग करके दिखाते हैं?

	4. क्या विद्यार्थी स्वयं TLM/ मॉडल का निर्माण करने में सक्षम है?
	5. क्या भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान विषयों का अध्यापन प्रयोग आधारित विधि से होता है?
प्रश्न क्रमांक 7, 8, 9 एवं 10 के लिए	अटल टिकरिंग लैब, विज्ञान प्रदर्शनी, कला उत्सव, क्रीड़ा प्रतियोगिता, योग:
	1. विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी में विकासखंड/ जिला /राज्य /राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता की जाती है।
	2. विद्यार्थियों द्वारा कला उत्सव प्रतियोगिता में विकासखंड/ जिला /राज्य /राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता की जाती है।
	3. विद्यार्थियों द्वारा क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में विकासखंड /जिला/ राज्य/ राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता की जाती है।
	4. विद्यार्थियों द्वारा योग एवं शारीरिक प्रतियोगिताओं में विकासखंड/ जिला /राज्य/ राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता की जाती है।
	5. क्या उपरोक्त समस्त प्रकार की गतिविधियों में विद्यालय की सहभागिता संतोषजनक है?
प्रश्न क्रमांक 11 के लिए	विभिन्न प्रकार के शिक्षण अधिगम:
	1. क्या आप विषय का अध्यापन गतिविधि आधारित विधि से करते हैं?
	2. क्या आप विषय का अध्यापन करते समय स्मार्ट बोर्ड का उपयोग करते हैं?
	3. क्या आप विषय का आईसीटी आधारित अध्यापन करते हैं?
	4. क्या आप विषय के अध्यापन में नवाचारी शिक्षण विधि का उपयोग करते हैं?
5. क्या आप विषय के अध्यापन में आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं?	
प्रश्न क्रमांक 12 के लिए	अतिथि व्याख्यान:
	1. क्या केवल विषय आधारित अतिथि व्याख्यान कराए जाते हैं?
	2. क्या विषय के अतिरिक्त विज्ञान दिवस एवं विशिष्ट दिवसों पर भी व्याख्यान कराए जाते हैं?
	3. क्या व्यावसायिक परामर्श एवं कैरियर चयन पर व्याख्यान कराए जाते हैं?
	4. क्या हायर सेकेंडरी स्तर पर विषय चयन हेतु व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श पर भी व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं?
5. क्या व्यक्तिगत प्रेरणा, नैतिक मूल्य, संवैधानिक मूल्यों एवं विविध विषयों पर विज्ञान आयोजित किए जाते हैं?	
प्रश्न क्रमांक 13 के लिए	कैरियर काउंसिलिंग:
	1. क्या केवल शिक्षकों के द्वारा कैरियर काउंसिलिंग की जाती है?

	2. क्या विद्यालय में व्यवसाय एक व्यक्तिगत और शैक्षणिक काउंसिलिंग दी जाती है?
	3. क्या कैरियर काउंसिलिंग में अभियोग्यता आधारित (Aptitude Based) कराई जाती है?
	4. क्या नियमित अंतराल में विशेषज्ञों से काउंसिलिंग कराई जाती है?
	5. क्या विद्यालय में व्यवसायिक, व्यक्तिगत और शैक्षणिक काउंसिलिंग से आपको लाभ होता है?
प्रश्न क्रमांक 14 के लिए	ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्म: ई-लर्निंग, गूगल, ई-विद्या, दीक्षा, अमृता, आदि
	1. आप कौन से एवं कितने ऑनलाइन शैक्षणिक प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं?
	2. क्या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आपको आसानी से उपलब्ध होते हैं?
	3. जिन ऑनलाइन शैक्षणिक प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं उससे आपको अपनी पढ़ाई के लिए किस प्रकार की सहायता मिलती है?
	4. क्या आप ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग अपने साथियों के साथ करते हैं?
	5. क्या आप कोई ई-कंटेंट बना सकते हैं?
प्रश्न क्रमांक 15 के लिए	पुस्तकालय प्रयोग:
	1. पुस्तकालय में आप किस तरह की पुस्तक पढ़ना पसंद करते हैं?
	2. आपके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों में से किसी एक पुस्तक का नाम बताइए?
	3. आपको सीखने में पुस्तकालय की पुस्तक कितनी मदद करती हैं?
	4. क्या आप नियमित रूप से पुस्तकालय से पुस्तक प्राप्त करते हैं?
	5. क्या पुस्तकालय की पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता करती हैं?
प्रश्न क्रमांक 16 के लिए	शाला सुरक्षा:
	1. क्या अग्निशामक यंत्र के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है?
	2. क्या सड़क सुरक्षा के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है?
	3. आत्मरक्षा का प्रशिक्षण आपके लिए कितना उपयोगी है?
	4. क्या साइबर सुरक्षा का प्रशिक्षण कराया जाता है?
	5. आपात स्थिति में इन सभी प्रशिक्षण का उपयोग करने के लिए आप कितने तैयार रहते हैं?

प्रश्न क्रमांक 17 के लिए	इको क्लब:
	1. क्या इको क्लब की गतिविधियों में भाग लेते हैं?
	2. क्या यूथ क्लब की गतिविधियों में भाग लेते हैं?
	3. क्या इको क्लब/यूथ क्लब के अंतर्गत वृक्षारोपण, बाल संसद आदि गतिविधियाँ करायी जाती है?
	4. विद्यालय में लगे पौधों का क्यूआर कोड जनरेटेड है?
5. क्या विद्यालय में इको क्लब के अंतर्गत “एक पेड़ माँ के नाम पर” लगाए जाते हैं?	
प्रश्न क्रमांक 18 के लिए	वार्षिक कैलेण्डर:
	1. क्या केवल नियमित मूल्यांकन त्रैमासिक, छः माही एवं वार्षिक परीक्षा का आयोजन करते हैं?
	2. क्या नियमित मूल्यांकन के अतिरिक्त रचनात्मक (फॉर्मेटिव) आकलन भी करते हैं?
	3. क्या रचनात्मक आकलन का आधार विभिन्न गतिविधियों का प्रारूप होता है?
	4. क्या नियमित अंतराल पर आकलन किया जाता है?
5. क्या वर्ष भर आवश्यकतानुसार रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन और उपचारात्मक शिक्षण भी किया जाता है?	
प्रश्न क्रमांक 19 के लिए	विद्यालय में उपलब्ध खेल सामग्रियों का निरीक्षण करें:
प्रश्न क्रमांक 20 के लिए	परीक्षा की तैयारी:
	1. क्या विषय आधारित विभाग के प्रशिक्षण में उपस्थित होते हैं?
	2. क्या विषय आधारित विभाग के प्रशिक्षण का उपयोग अपनी कक्षा के अध्यापन में करते हैं?
	3. क्या व्यक्तिगत क्षमता संवर्धन से संबंधित प्रशिक्षण में रुचि लेते हैं?
	4. क्या व्यक्तिगत विकास संप्रेषण कौशल 21वीं सदी के कौशलों का प्रशिक्षण में रुचि लेते हैं?
5. क्या समस्त प्रशिक्षण का प्रयोग कक्षा अध्यापन में करते हैं?	

प्रारंभिक अंकेक्षण हेतु विद्यालय ऑडिट टूल्स (नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप)

स.क्र.	क्षेत्र	मूल्यांकन के प्रश्न		अंक (1 से 5)	रिमार्क	LO's
1	विद्यालय से संबंधित	1.1	विद्यालय का विगत तीन वर्षों का परीक्षा परिणाम रहा?			NEP2020 4.35, 4.36, 4.37
			कक्षा 10वीं			-
		कक्षा 12वीं			-	
		1.2	विद्यालय में मूलभूत सुविधा उपलब्ध है?			NEP2020 3.3, 3.4
2	विद्यार्थी से संबंधित	2.1	21वीं सदी के कौशल (समस्या-समाधान योग्यता, तार्किक योग्यता, गणितीय सोच, सम्प्रेषण इत्यादि) बच्चों में दिखाई देते हैं।			NEP2020 4.4 NEP2020 9.1.1
		2.2	क्या विद्यार्थी दिए गए गृहकार्य को पूरा करते हैं?			NEP 2020
		2.3	क्या विद्यार्थी सीखने -सिखाने में Peer learning/ Group Learning का उपयोग करते हैं?			NEP2020 4.2.2 NEP2020 4.2.3
		2.4	क्या विद्यार्थी प्रयोगशाला (विज्ञान, भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान इत्यादि) के उपकरणों /मॉडल/टीएलएम का उपयोग करते हैं?			NEP2020 9.1.1
		2.5	क्या विद्यार्थी द्वारा अटल टिकरिंग लेब का उपयोग किया जाता है? (जिस विद्यालय में अटल टिकरिंग लेब है उसी में लागू)			NEP2020 4.25
		2.6	क्या विज्ञान प्रदर्शनी/कला उत्सव/क्रीडा प्रतियोगिता/योगा में विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की गई?			NEP2020 4.6, 4.7, 4.8
		2.7	क्या विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम विधियां जैसे - गतिविधियाँ आधारित/डिजिटल /अनुभवात्मक विधि इत्यादि से पढ़ाया जाता है?			NEP2020 4.3, 4.5
		2.8	विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा Guest Lecture (अतिथि व्याख्यान) कराए जाते हैं?			NEP2020, VE
		2.9	क्या शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को कैरियर काउंसलिंग/शैक्षिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है?			NEP2020 7.7
		2.10	क्या विद्यार्थी सीखने हेतु ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफार्म जैसे - ई-लर्निंग, गूगल, ई-विद्या, दीक्षा, अमृता आदि का उपयोग करते हैं?			NEP2020 23.1
		2.11	क्या विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं?			NEP 2020 LIB.
		2.12	शाला सुरक्षा/सड़क सुरक्षा/आत्मरक्षा इत्यादि के संबंध में शिक्षकों से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त होता है?			NEP2020 8.11
		2.13	क्या शाला में इको क्लब/यूथ क्लब संचालित है?			NEP2020 4.23
3	शिक्षक से संबंधित	3.1	वार्षिक शैक्षिक कैलेण्डर के अनुसार पाठ्यक्रम की पूर्णता पश्चात् लर्निंग आउटकम पर आधारित संबंधित विषय शिक्षक द्वारा आकलन किया जाता है।			NEP2020 4.2
		3.4	विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी हेतु गत वर्षों में प्रश्न पत्र हल करना /पुनरावृत्ति/उपचारात्मक शिक्षा आदि कराया जाता है?			

मुख्यमंत्री शिक्षा गुणवत्ता अभियान

हाई / हायर सेकेंडरी स्तर

अनुलग्नक (Annexure)

21वीं सदी के कौशल (21st Century Skills) उन क्षमताओं और योग्यताओं को कहते हैं जो आज के तेजी से बदलते हुए दुनिया में सफल होने के लिए ज़रूरी हैं। ये केवल किताबी ज्ञान से हटकर हैं और इसमें गहरी सोच, समस्या-समाधान, टीम वर्क और अनुकूलनशीलता पर जोर दिया जाता है।

इन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

1. सीखने के कौशल (Learning Skills) - "4 C's"

ये कौशल आपको नई चीजें सीखने और उन्हें प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने में मदद करते हैं:

- **आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking):** जानकारी का विश्लेषण करना और तर्कसंगत निर्णय लेना।
- **रचनात्मकता (Creativity):** नए और अनोखे विचार लाना और समस्याओं का नया समाधान खोजना।
- **सहयोग (Collaboration):** दूसरों के साथ मिलकर काम करना और टीम के रूप में लक्ष्य प्राप्त करना।
- **संचार (Communication):** अपने विचारों और सूचनाओं को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से व्यक्त करना।

2. साक्षरता कौशल (Literacy Skills) - "IMT"

ये कौशल डिजिटल युग में जानकारी को समझने और उपयोग करने से संबंधित हैं:

- **सूचना साक्षरता (Information Literacy):** सही जानकारी ढूँढना, उसका मूल्यांकन करना और सही तरीके से इस्तेमाल करना।
- **मीडिया साक्षरता (Media Literacy):** अलग-अलग मीडिया रूपों (जैसे समाचार, विज्ञापन) को समझना और उनका विश्लेषण करना।
- **तकनीकी साक्षरता (Technology Literacy):** डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर का प्रभावी ढंग से उपयोग करना।

3. जीवन कौशल (Life Skills) - "FLIPS"

ये कौशल व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता के लिए आवश्यक हैं:

- **लचीलापन और अनुकूलनशीलता (Flexibility & Adaptability):** बदलती परिस्थितियों के हिसाब से खुद को ढालना।
- **पहल और आत्म-निर्देशन (Initiative & Self-Direction):** बिना बाहरी दबाव के काम शुरू करना और अपनी पढ़ाई व लक्ष्यों की जिम्मेदारी लेना।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक कौशल (Social & Cross-Cultural Skills):** अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करना।
- **उत्पादकता और जवाबदेही (Productivity & Accountability):** काम को कुशलता से करना और अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होना।
- **नेतृत्व और जिम्मेदारी (Leadership & Responsibility):** दूसरों का मार्गदर्शन करना और सामाजिक भलाई के लिए जिम्मेदारी लेना।

ये कौशल छात्रों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं और उन्हें व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में सफल होने में मदद करते हैं।

4. गृहकार्य (Homework) क्या है?

गृहकार्य वह शैक्षिक काम है जो छात्रों को स्कूल के समय के बाहर, आमतौर पर घर पर, पूरा करने के लिए दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य स्कूल में सीखे गए पाठों और अवधारणाओं को मजबूत करना, अभ्यास करना और आगे बढ़ाना है।

मुख्य उद्देश्य:

- **ज्ञान का दोहराव:** स्कूल में पढ़ाए गए विषयों को दोहराना और बेहतर समझना।
- **जिम्मेदारी और समय प्रबंधन:** छात्रों को अपने काम की योजना बनाने और समय पर उसे पूरा करने की आदत डालना।
- **स्वतंत्र सीखना:** बिना शिक्षक की सीधी मदद के समस्याओं को हल करना सिखाना।
- **माता-पिता की भागीदारी:** उन्हें बच्चे की पढ़ाई से जोड़ना।
- **कमजोरियों की पहचान:** यह जानना कि छात्र को किन क्षेत्रों में और मदद की ज़रूरत है।

गृहकार्य छात्रों को अकादमिक रूप से सफल होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण जीवन कौशल विकसित करने में भी मदद करता है।

5. पीयर लर्निंग का अर्थ है – जब विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ मिलकर एक-दूसरे से सीखते हैं। इसमें वे एक-दूसरे की मदद करते हैं, समझाते हैं, और मिलकर समस्याओं का हल ढूँढते हैं। **उद्धरण**

- सहपाठी को कठिन प्रश्न समझाना
- जोड़ी बनाकर अभ्यास कार्य करना
- साथी मूल्यांकन (peer assessment)

ग्रुप लर्निंग वह प्रक्रिया है जिसमें छात्र एक समूह में मिलकर किसी विषय को समझते हैं, चर्चा करते हैं और मिलकर कार्य करते हैं।

समूह में प्रोजेक्ट बनाना, विषय पर चर्चा (group discussion), समस्या समाधान गतिविधियाँ (problem-solving tasks)

6. यहाँ कुछ सामान्य उपकरणों/मॉडल/टीएलएम और उनके उपयोग का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

1. भौतिकी प्रयोगशाला के उपकरण/मॉडल/टीएलएम:

- बीकर और फ्लास्क (Beakers & Flasks): तरल पदार्थों को मापने, मिश्रण करने और गर्म करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। विभिन्न आकारों में उपलब्ध होते हैं।
- परखनली (Test Tubes): छोटे पैमाने पर रासायनिक अभिक्रियाएँ करने या थोड़ी मात्रा में तरल पदार्थ रखने के लिए उपयोग की जाती हैं।
- मापने वाला सिलेंडर (Measuring Cylinder): तरल पदार्थों के आयतन (volume) को सटीक रूप से मापने के लिए उपयोग किया जाता है।
- थर्मामीटर (Thermometer): तापमान मापने के लिए उपयोग किया जाता है, आमतौर पर सेल्सियस या फेरेनहाइट स्केल में।
- वजन/तुला (Weighing Scale/Balance): पदार्थों का द्रव्यमान (mass) मापने के लिए, जैसे कि स्प्रिंग बैलेंस या डिजिटल बैलेंस।
- स्प्रिंग बैलेंस (Spring Balance): बल या भार मापने के लिए उपयोग किया जाता है, जो स्प्रिंग के खिंचाव के सिद्धांत पर काम करता है।
- प्रकाशिकी किट (Optics Kit): इसमें लेंस, प्रिज्म, दर्पण, लेजर आदि होते हैं जो प्रकाश के परावर्तन (reflection), अपवर्तन (refraction) और विवर्तन (diffraction) जैसे गुणों का अध्ययन करने में मदद करते हैं।
- विद्युत परिपथ किट (Electrical Circuit Kit): बैटरी, तार, बल्ब, प्रतिरोधक (resistors), स्विच आदि होते हैं जो विद्युत परिपथ बनाने और बिजली के सिद्धांतों को समझने में सहायक होते हैं।
- पुली (Pulleys): बलों को बदलने और भारी वस्तुओं को उठाने के लिए उपयोग किए जाने वाले सरल यांत्रिक उपकरण। इनका उपयोग बल के लाभ (mechanical advantage) को समझाने के लिए होता है।
- पेंडुलम (Pendulum): दोलन गति (oscillatory motion) और गुरुत्वाकर्षण के त्वरण (acceleration due to gravity) का अध्ययन करने के लिए उपयोग किया जाता है।

2. रसायन विज्ञान प्रयोगशाला के उपकरण/मॉडल/टीएलएम:

- बन्सेन बर्नर (Bunsen Burner): कांच के सामान को गर्म करने या रासायनिक अभिक्रियाओं के लिए एक गर्म, स्थिर लौ प्रदान करता है।
- टेस्ट ट्यूब होल्डर/रैक (Test Tube Holder/Rack): परखनली को पकड़ने या व्यवस्थित रखने के लिए।

- ड्रॉपर/पिपेट (Dropper/Pipette): तरल पदार्थ की छोटी मात्रा को सटीक रूप से स्थानांतरित करने के लिए।
- ब्यूरेट (Burette): अनुमापन (titration) में तरल पदार्थ की सटीक और नियंत्रित मात्रा को निकालने के लिए उपयोग किया जाता है।
- कण मॉडल किट (Molecular Model Kit): परमाणुओं को जोड़ने और विभिन्न अणुओं की 3D संरचनाएं बनाने के लिए उपयोग किया जाता है, जिससे रासायनिक बंधन और आणविक ज्यामिति को समझना आसान हो जाता है।
- पीएच पेपर/मीटर (pH Paper/Meter): किसी घोल की अम्लता या क्षारकता (pH) को मापने के लिए।
- फनेल (Funnel): तरल पदार्थों को संकीर्ण मुंह वाले कंटेनर में स्थानांतरित करने या छानने के लिए।
- ट्राइपॉड स्टैंड और वायर गॉज (Tripod Stand & Wire Gauze): बर्नर के ऊपर बीकर या फ्लास्क को सहारा देने और गर्म करने के लिए।

3. जीवविज्ञान प्रयोगशाला के उपकरण/मॉडल/टीएलएम:

- सूक्ष्मदर्शी (Microscope): कोशिकाओं, ऊतकों और सूक्ष्मजीवों जैसे बहुत छोटे नमूनों को बड़ा करके देखने के लिए।
- स्लाइड और कवर स्लिप (Slides & Cover Slips): सूक्ष्मदर्शी के नीचे अवलोकन के लिए नमूने रखने के लिए।
- पेट्री डिश (Petri Dish): सूक्ष्मजीवों की संस्कृति (culture) के लिए उपयोग की जाने वाली एक उथली, गोल डिश।
- विच्छेदन किट (Dissection Kit): जानवरों या पौधों के नमूनों को सावधानीपूर्वक विच्छेदित (dissect) करने के लिए कैंची, चिमटी, स्केलपेल आदि।
- मानव कंकाल मॉडल (Human Skeleton Model): मानव शरीर की हड्डियों की संरचना और नामकरण को समझने के लिए।
- मानव अंग मॉडल (Human Organ Models): हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क आदि के मॉडल जो इन अंगों की संरचना और कार्य को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।
- पौधे के हिस्से के मॉडल (Plant Part Models): फूल, पत्ती, जड़ आदि के बड़े हुए मॉडल जो उनकी आंतरिक और बाहरी संरचना को समझने में मदद करते हैं।
- वनस्पति विज्ञान स्लाइड सेट (Botany Slide Set): पौधों की कोशिकाओं, ऊतकों और सूक्ष्मजीवों की तैयार स्लाइड्स।
- जंतु विज्ञान स्लाइड सेट (Zoology Slide Set): विभिन्न जंतु कोशिकाओं, ऊतकों और छोटे जीवों की तैयार स्लाइड्स।
- एग्जामिनिंग लेंस (Examining Lens/Magnifying Glass): छोटी वस्तुओं को बड़ा करके देखने के लिए।

टीएलएम (शिक्षण-अधिगम सामग्री - Teaching-Learning Material) का महत्व:

टीएलएम में चार्ट, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, वीडियो, सिमुलेशन और इंटरैक्टिव डिजिटल सामग्री भी शामिल हो सकती है। इनका उपयोग छात्रों को अवधारणाओं को अधिक प्रभावी ढंग से समझने, सीखने की प्रक्रिया को आकर्षक बनाने और सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ने के लिए किया जाता है। ये उपकरण/मॉडल/टीएलएम विज्ञान को अमूर्त से मूर्त बनाने में मदद करते हैं, जिससे छात्र सक्रिय रूप से सीख पाते हैं।

7 A अटल टिकरिंग लैब (Atal Tinkering Lab - ATL) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसे **नीति आयोग** के **अटल इनोवेशन मिशन (AIM)** के तहत शुरू किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के स्कूली बच्चों में **जिज्ञासा, रचनात्मकता, नवीनता (innovation) और उद्यमिता (entrepreneurship)** की भावना को बढ़ावा देना है।

अटल टिकरिंग लैब क्या है?

ATL स्कूलों में स्थापित किए गए विशेष **वर्कस्पेस (कार्यस्थान)** हैं जहाँ छात्रों को विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी उपकरणों, औजारों और संसाधनों तक पहुँच मिलती है। ये लैब छात्रों को **हाथ से काम करने (hands-on learning)** और **अनुभवात्मक सीखने (experiential learning)** का अवसर प्रदान करती हैं।

यहाँ छात्र अपने **आइडियाज़ को वास्तविक रूप देने**, प्रोटोटाइप बनाने, उनका परीक्षण करने और विभिन्न समस्याओं के समाधान खोजने के लिए प्रयोग कर सकते हैं।

अटल टिकरिंग लैब में क्या होता है?

इन लैब्स में आमतौर पर शामिल होते हैं:

- **इलेक्ट्रॉनिक किट:** जैसे सर्किट बोर्ड, सेंसर, माइक्रोकंट्रोलर (जैसे Arduino, Raspberry Pi)
- **रोबोटिक्स उपकरण:** रोबोट बनाने और प्रोग्रामिंग सीखने के लिए
- **3D प्रिंटर:** डिजाइन किए गए मॉडलों को वास्तविक वस्तुओं में बदलने के लिए
- **वैज्ञानिक उपकरण:** विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों और नवाचारों के लिए
- **मैकेनिकल टूल्स:** छोटे-मोटे यांत्रिक कार्य करने के लिए
- **सुरक्षा उपकरण:** प्रयोग करते समय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए
- **अन्य संसाधन:** जैसे लैपटॉप, इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजाइन थिंकिंग टूल।

अटल टिकरिंग लैब के उद्देश्य और फायदे:

1. **नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा:** छात्रों को लीक से हटकर सोचने और नए विचार विकसित करने के लिए प्रेरित करना।
2. **समस्या-समाधान कौशल का विकास:** छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं को पहचानना और उनके रचनात्मक समाधान खोजना सिखाना।
3. **व्यावहारिक कौशल:** किताबी ज्ञान को व्यावहारिक रूप से लागू करने का अवसर देना।
4. **21वीं सदी के कौशल:** महत्वपूर्ण सोच, सहयोग, संचार और डिजिटल साक्षरता जैसे कौशल विकसित करना।
5. **उद्यमिता की मानसिकता:** छात्रों में युवावस्था से ही उद्यमी बनने और अपने विचारों को व्यवसाय में बदलने की क्षमता विकसित करना।
6. **STEM शिक्षा को बढ़ावा:** विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) के प्रति रुचि जगाना।
7. **भविष्य के लिए तैयारी:** छात्रों को भविष्य की तकनीकी और वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करना।

संक्षेप में, अटल टिकरिंग लैब भारत के युवा छात्रों को नवाचार और प्रौद्योगिकी के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए एक मंच है, ताकि वे भविष्य के समस्या-समाधानकर्ता और निर्माता बन सकें।

7 B विज्ञान प्रदर्शनी (Science Exhibition) एक ऐसा कार्यक्रम या आयोजन होता है जहाँ छात्र, वैज्ञानिक या अन्य व्यक्ति अपने **वैज्ञानिक प्रोजेक्ट, प्रयोग, मॉडल और खोजों** को प्रदर्शित करते हैं। यह एक मंच है जहाँ वे अपने **विचारों, शोध और समझ** को दूसरों के सामने प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य विशेषताएँ और उद्देश्य:

- **रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा:** यह छात्रों को नए और अनोखे विचार लाने और उन्हें वास्तविक रूप देने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- **वैज्ञानिक सोच का विकास:** छात्र समस्याओं को वैज्ञानिक तरीके से हल करना सीखते हैं और उनमें **आलोचनात्मक सोच (critical thinking)** विकसित होती है।
- **व्यावहारिक अनुप्रयोग:** किताबी ज्ञान को वास्तविक जीवन में कैसे लागू किया जा सकता है, यह प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है।
- **जिज्ञासा जगाना:** विज्ञान के प्रति रुचि और उत्सुकता पैदा करता है।
- **प्रस्तुति और संचार कौशल:** छात्रों को अपने प्रोजेक्ट्स को दूसरों के सामने स्पष्ट रूप से समझाने का अभ्यास मिलता है।
- **समस्या-समाधान:** छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है।
- **सीखने का अनुभव:** यह केवल प्रदर्शन नहीं, बल्कि छात्रों और दर्शकों दोनों के लिए एक सीखने का अनुभव होता है।
- **प्रतिभा प्रदर्शन:** यह छात्रों को अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा और कौशल को प्रदर्शित करने का अवसर देता है।

संक्षेप में, विज्ञान प्रदर्शनी एक ऐसा मंच है जहाँ **विज्ञान को मजेदार और आकर्षक तरीके से सीखा और सिखाया जाता है**, जिससे छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार की भावना बढ़ती है।

विज्ञान प्रदर्शनी एक ऐसा आयोजन है जहाँ छात्र, वैज्ञानिक, या शोधकर्ता अपने वैज्ञानिक प्रोजेक्ट्स, प्रयोगों, मॉडल्स और खोजों को लोगों के सामने दिखाते हैं। यह एक ऐसा मंच है जहाँ वे अपने वैज्ञानिक विचारों, शोधों और समझ को प्रदर्शित करते हैं।

मुख्य उद्देश्य और फायदे:

- **रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा:** यह छात्रों को नए आइडियाज़ सोचने और उन्हें असल रूप देने के लिए प्रेरित करता है।
- **वैज्ञानिक सोच का विकास:** छात्र सीखते हैं कि समस्याओं को वैज्ञानिक तरीके से कैसे हल किया जाए, जिससे उनमें आलोचनात्मक सोच बढ़ती है।
- **व्यावहारिक ज्ञान:** किताबी ज्ञान को असल ज़िंदगी में कैसे लागू किया जाता है, यह दिखाने का मौका मिलता है।
- **जिज्ञासा जगाना:** विज्ञान के प्रति रुचि और उत्सुकता पैदा होती है।
- **प्रस्तुति और संचार कौशल:** छात्रों को अपने प्रोजेक्ट्स को दूसरों को समझाने का अभ्यास मिलता है।
- **समस्या-समाधान:** छात्रों को दुनिया की समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है।
- **सीखने का अनुभव:** यह सिर्फ दिखाने का नहीं, बल्कि सीखने और सिखाने का भी एक बेहतरीन अनुभव होता है।
- **प्रतिभा प्रदर्शन:** छात्रों को अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है।

संक्षेप में, विज्ञान प्रदर्शनी विज्ञान को मज़ेदार और आकर्षक तरीके से सीखने और सिखाने का एक ज़रिया है, जिससे छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और कुछ नया करने की भावना बढ़ती है।

11. शिक्षण-अधिगम विधियाँ वे तरीके और रणनीतियाँ हैं जिनका उपयोग शिक्षक छात्रों को जानकारी, कौशल और ज्ञान प्राप्त करने में मदद करने के लिए करते हैं। आज के समय में, सीखने को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाने के लिए कई नई और उन्नत विधियों का उपयोग किया जा रहा है। यहाँ विभिन्न प्रकार की शिक्षण-अधिगम विधियों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, जिनमें गतिविधियाँ-आधारित, डिजिटल और अनुभवात्मक विधियाँ शामिल हैं:

1. गतिविधियाँ-आधारित शिक्षण (Activity-Based Learning - ABL)

- **क्या है?** जैसा कि नाम से पता चलता है, यह एक शिक्षण पद्धति है जिसमें छात्र निष्क्रिय रूप से सुनने के बजाय विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। सीखने की प्रक्रिया में छात्र "करके सीखते हैं"।
- **कैसे काम करता है?** शिक्षक पाठ को विभिन्न छोटी-छोटी गतिविधियों, खेलों, प्रयोगों, समूह कार्यों, रोल-प्ले (भूमिका-निर्वाह) आदि में बांट देते हैं। छात्र इन गतिविधियों में शामिल होकर अवधारणाओं को समझते हैं।
- **उदाहरण:** विज्ञान में पौधों के भागों को पहचानने के लिए असली पौधे का अवलोकन करना, गणित में आकृतियों को समझने के लिए ब्लॉक का उपयोग करना, या भाषा में संवाद कौशल के लिए नाटक करना।
- **फायदे:**
 - छात्रों की रुचि बढ़ाता है और सीखने को मज़ेदार बनाता है।
 - अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करता है।
 - रचनात्मकता, समस्या-समाधान और सहयोग कौशल को बढ़ावा देता है।
 - याद रखने की क्षमता में सुधार होता है क्योंकि छात्र सीधे अनुभव करते हैं।

2. डिजिटल शिक्षण (Digital Learning)

- **क्या है?** यह डिजिटल उपकरणों, प्रौद्योगिकी और संसाधनों का उपयोग करके शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने का तरीका है।
- **कैसे काम करता है?** इसमें इंटरनेट, कंप्यूटर, टैबलेट, स्मार्टफोन, ई-बुक्स, ऑनलाइन वीडियो, लर्निंग ऐप्स, वर्चुअल रियलिटी (VR), और संवर्धित वास्तविकता (AR) जैसे उपकरण और प्लेटफॉर्म शामिल होते हैं। शिक्षक डिजिटल सामग्री का उपयोग करते हैं और छात्र इन उपकरणों के माध्यम से सीखते हैं।

- **उदाहरण:** ऑनलाइन कक्षाएं (Zoom, Google Meet), शैक्षिक वीडियो (YouTube, Khan Academy), इंटरैक्टिव सिमुलेशन, ई-लर्निंग पोर्टल (DIKSHA, SWAYAM), और गेम-आधारित सीखने के एप्लिकेशन।
- **फायदे:**
 - कहीं भी, कभी भी सीखने की सुविधा प्रदान करता है (लचीलापन)।
 - सीखने को अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक बनाता है।
 - छात्रों को नवीनतम जानकारी और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है।
 - व्यक्तिगत सीखने की गति के अनुसार अनुकूलनशीलता संभव है।
 - तकनीकी साक्षरता और 21वीं सदी के कौशल विकसित करता है।

3. अनुभवात्मक विधि (Experiential Learning)

- **क्या है?** यह एक शिक्षण-अधिगम विधि है जहाँ छात्र प्रत्यक्ष अनुभव (direct experience), आत्म-चिंतन (reflection) और वास्तविक दुनिया में अनुप्रयोग के माध्यम से सीखते हैं। इसका मूल सिद्धांत "करके सीखना" है, लेकिन इसमें अनुभव पर चिंतन करना भी शामिल है।
- **कैसे काम करता है?** छात्र किसी गतिविधि में शामिल होते हैं, उस अनुभव पर विचार करते हैं कि क्या हुआ, क्यों हुआ, उससे उन्होंने क्या सीखा, और फिर उस सीख को भविष्य की स्थितियों में कैसे लागू किया जा सकता है, इस पर सोचते हैं। इसमें अक्सर डेविड कोल्ब का अनुभवात्मक सीखने का चक्र (अनुभव -> चिंतन -> अवधारणा -> प्रयोग) शामिल होता है।
- **उदाहरण:**
 - फील्ड ट्रिप/शैक्षिक यात्राएं: संग्रहालय, ऐतिहासिक स्थल, कारखाने या चिड़ियाघर का दौरा करना।
 - प्रयोगशाला प्रयोग: वैज्ञानिक अवधारणाओं को सीधे प्रयोग करके समझना।
 - इंटरैक्टिव/प्रैक्टिकम: वास्तविक कार्यस्थल पर काम करके सीखना।
 - सिमुलेशन और रोल-प्ले: वास्तविक जीवन की स्थितियों का अनुकरण करना।
 - परियोजना-आधारित सीखना (Project-Based Learning - PBL): जिसमें छात्र एक वास्तविक दुनिया की समस्या को हल करने के लिए एक विस्तृत परियोजना पर काम करते हैं।
- **फायदे:**
 - ज्ञान को स्थायी और सार्थक बनाता है।
 - समस्या-समाधान, निर्णय लेने और अनुकूलनशीलता जैसे उच्च-स्तरीय कौशल विकसित करता है।
 - छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।
 - आत्म-जागरूकता और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

ये तीनों विधियाँ अक्सर एक-दूसरे के पूरक होती हैं और एक प्रभावी सीखने के माहौल के लिए इन्हें एक साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। इनका उद्देश्य पारंपरिक रटने के बजाय छात्रों को सक्रिय, संलग्न और चिंतनशील शिक्षार्थी बनाना है।

12. अतिथि व्याख्यान (Guest Lecture) विद्यालय के संदर्भ में एक ऐसी शैक्षिक गतिविधि है जहाँ बाहर से किसी विशेषज्ञ या अनुभवी व्यक्ति को विद्यालय में आमंत्रित किया जाता है ताकि वे छात्रों और/या शिक्षकों को किसी विशिष्ट विषय या क्षेत्र पर जानकारी, अंतर्दृष्टि और अनुभव साझा कर सकें।

यह नियमित पाठ्यक्रम और कक्षा शिक्षण से हटकर एक विशेष सत्र होता है, जिसका उद्देश्य सीखने के अनुभव को समृद्ध करना और छात्रों को बाहरी दुनिया से जोड़ना होता है।

अतिथि व्याख्यान के मुख्य उद्देश्य और लाभ:

1. विषय विशेषज्ञता (Subject Matter Expertise):

- छात्रों को उस विषय के बारे में गहरी और अद्यतन जानकारी मिलती है जिसके विशेषज्ञ को बुलाया गया है।

- विशेषज्ञों के पास अक्सर वास्तविक दुनिया के अनुभव और अंतर्दृष्टि होती है जो पाठ्यपुस्तकों में नहीं मिलतीं।
- 2. **प्रेरणा और करियर मार्गदर्शन (Motivation & Career Guidance):**
 - सफल पेशेवरों को सुनकर छात्र प्रेरित होते हैं। वे अपने करियर लक्ष्यों के बारे में स्पष्टता प्राप्त कर सकते हैं।
 - छात्रों को विभिन्न करियर विकल्पों और उनसे जुड़ी चुनौतियों व अवसरों के बारे में जानकारी मिलती है।
- 3. **वास्तविक दुनिया से जुड़ाव (Real-World Connection):**
 - अकादमिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुप्रयोगों और वास्तविक जीवन की स्थितियों से जोड़ने में मदद करता है।
 - छात्रों को यह समझने में मदद मिलती है कि वे जो सीख रहे हैं वह उनके भविष्य में कैसे उपयोगी हो सकता है।
- 4. **नवाचार और नए दृष्टिकोण (Innovation & New Perspectives):**
 - विशेषज्ञ अपने क्षेत्र में नवीनतम रुझानों, प्रौद्योगिकियों और नवाचारों के बारे में जानकारी दे सकते हैं।
 - छात्रों को किसी विषय पर सोचने के नए और अलग तरीके मिलते हैं।
- 5. **ज्ञान का विस्तार (Expansion of Knowledge):**
 - उन विषयों पर जानकारी प्रदान की जाती है जो शायद नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा न हों, लेकिन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण हों।
 - यह छात्रों के सामान्य ज्ञान और जागरूकता को बढ़ाता है।
- 6. **नेटवर्किंग और संपर्क (Networking & Exposure):**
 - छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों से जुड़ने और उनसे सवाल पूछने का अवसर मिलता है।
 - यह उनके भविष्य के लिए संभावित मेंटरशिप या करियर के अवसर खोल सकता है।

अतिथि व्याख्यान कैसे आयोजित किया जाता है?

- विद्यालय किसी विशिष्ट विषय (जैसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, करियर) के विशेषज्ञ को पहचानता है।
- आमंत्रित विशेषज्ञ छात्रों के साथ इंटरैक्टिव सत्र, प्रश्नोत्तर सत्र या प्रदर्शन के माध्यम से जानकारी साझा करते हैं।
- यह एक औपचारिक व्याख्यान, एक कार्यशाला, या एक अनौपचारिक बातचीत के रूप में हो सकता है।

संक्षेप में, अतिथि व्याख्यान विद्यालय के छात्रों के लिए ज्ञान, प्रेरणा और वास्तविक दुनिया के अनुभवों का एक अनमोल स्रोत है, जो उनके समग्र शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

13. करियर काउंसलिंग/शैक्षिक मार्गदर्शन क्या है?

करियर काउंसलिंग (Career Counseling) या **शैक्षिक मार्गदर्शन (Educational Guidance)** एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विशेषज्ञों द्वारा छात्रों और व्यक्तियों को उनके शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए सलाह, सूचना और समर्थन प्रदान किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को उसकी क्षमताओं, रुचियों, व्यक्तित्व और मूल्यों के आधार पर सही करियर पथ चुनने और उस पर आगे बढ़ने में सहायता करना है।

करियर काउंसलिंग / शैक्षिक मार्गदर्शन में क्या होता है?

इस प्रक्रिया में आमतौर पर ये चरण शामिल होते हैं:

1. आत्म-अन्वेषण (Self-Exploration):

- काउंसलर व्यक्ति को खुद को समझने में मदद करता है। इसमें उनकी रुचियों, योग्यताओं (aptitudes), कौशलों (skills), व्यक्तित्व विशेषताओं, मूल्यों और आकांक्षाओं का आकलन किया जाता है।

- इसके लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों (जैसे एप्टीट्यूड टेस्ट, पर्सनैलिटी इन्वेंटरी) का उपयोग किया जा सकता है।

2. कैरियर/शैक्षिक विकल्पों की खोज (Exploration of Career/Educational Options):

- छात्रों को विभिन्न कैरियर क्षेत्रों, शैक्षिक कोर्सेज और उनके लिए आवश्यक योग्यताओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है।
- उन्हें यह समझने में मदद की जाती है कि कौन से विकल्प उनकी व्यक्तिगत प्रोफाइल से मेल खाते हैं।

3. निर्णय लेना (Decision Making):

- काउंसलर छात्रों को उपलब्ध जानकारी के आधार पर सोच-समझकर निर्णय लेने में सहायता करता है।
- यह भविष्य के लक्ष्यों के साथ वर्तमान विकल्पों को जोड़ने की प्रक्रिया है।

4. कार्य योजना का विकास (Development of Action Plan):

- सही विकल्प चुनने के बाद, एक व्यावहारिक कार्य योजना (जैसे कौन से कोर्स करने हैं, किन कॉलेजों में आवेदन करना है, कौन से कौशल विकसित करने हैं) बनाई जाती है।
- इसमें प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी, आवेदन प्रक्रिया और छात्रवृत्ति के अवसरों जैसी बातें शामिल हो सकती हैं।

5. समस्या-समाधान और बाधाओं का निवारण (Problem-Solving & Overcoming Hurdles):

- काउंसलिंग में कैरियर या शिक्षा से संबंधित किसी भी बाधा या चुनौती (जैसे तनाव, प्रेरणा की कमी, अकादमिक कठिनाइयां) को हल करने में मदद की जाती है।

कैरियर काउंसलिंग / शैक्षिक मार्गदर्शन का महत्व:

- **सही दिशा का चुनाव:** छात्रों को भ्रमित होने से बचाता है और उन्हें अपनी क्षमताओं के अनुरूप सही शैक्षिक या व्यावसायिक मार्ग चुनने में मदद करता है।
- **अवसरों की जानकारी:** छात्रों को विभिन्न उभरते हुए कैरियर क्षेत्रों और शैक्षिक अवसरों के बारे में बताता है जिनके बारे में वे शायद अनजान हों।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** सही मार्गदर्शन से छात्रों में अपने चुने हुए मार्ग पर आगे बढ़ने का आत्मविश्वास आता है।
- **समय और संसाधनों की बचत:** गलत कैरियर या कोर्स चुनने से होने वाली बर्बादी से बचाता है।
- **व्यक्तिगत विकास:** छात्रों को आत्म-जागरूक बनने और अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद करता है।
- **भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयारी:** छात्रों को बदलती दुनिया में कैरियर की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है।

संक्षेप में, कैरियर काउंसलिंग/शैक्षिक मार्गदर्शन एक पुल का काम करता है जो छात्रों की वर्तमान स्थिति को उनके भविष्य के लक्ष्यों से जोड़ता है, उन्हें सूचित निर्णय लेने और सफल जीवन पथ पर आगे बढ़ने में सक्षम बनाता है।

14. ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्म वे डिजिटल माध्यम हैं जो इंटरनेट और टेक्नोलॉजी का उपयोग करके सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को सुगम बनाते हैं। ये पारंपरिक कक्षा के अनुभवों से परे जाकर छात्रों और शिक्षकों को व्यापक शैक्षिक सामग्री, उपकरण और अवसर प्रदान करते हैं।

यहाँ कुछ प्रमुख ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्म और उनके प्रकार दिए गए हैं:

1. ई-लर्निंग (E-Learning)

- **क्या है:** ई-लर्निंग या इलेक्ट्रॉनिक लर्निंग एक व्यापक शब्द है जो सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित सीखने और अध्यापन को संदर्भित करता है। इसमें कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल डिवाइस, सीडी-रोम आदि का उपयोग करके शिक्षा प्रदान की जाती है।
- **उद्देश्य:** शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत गति, सुविधा और व्यापक संसाधनों के साथ सीखने का अवसर प्रदान करना। यह औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है।

- **उदाहरण:** ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार, वीडियो ट्यूटोरियल, इंटरैक्टिव मॉड्यूल।
- **फायदे:** लचीलापन (कभी भी, कहीं भी सीखना), स्व-गति से सीखना, संसाधनों की व्यापक पहुंच।

2. गूगल (Google for Education)

- **क्या है:** Google for Education Google के उत्पादों और सेवाओं का एक सूट है जिसे विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह शिक्षकों और छात्रों के लिए सहयोग, संचार और सीखने के उपकरण प्रदान करता है।
- **उपकरण:**
 - **Google Classroom:** असाइनमेंट साझा करने, गृहकार्य जमा करने, ग्रेडिंग करने और छात्रों के साथ संवाद करने के लिए एक मंच।
 - **Google Workspace for Education (पहले G Suite for Education):** इसमें Gmail, Google Drive, Google Docs, Sheets, Slides, Meet आदि शामिल हैं जो सहयोग और उत्पादकता बढ़ाते हैं।
 - **Chrome books:** शिक्षा के लिए डिज़ाइन किए गए कम लागत वाले लैपटॉप।
- **उद्देश्य:** सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आसान, अधिक इंटरैक्टिव और सहयोगी बनाना।

3. पीएम ई-विद्या (PM e-VIDYA)

- **क्या है:** यह भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (अटल आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत) द्वारा शुरू की गई एक व्यापक पहल है। इसका उद्देश्य डिजिटल, ऑनलाइन और ऑन-एयर प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा तक बहु-स्तरीय पहुंच सुनिश्चित करना है।
- **मुख्य घटक:**
 - **वन क्लास वन चैनल:** कक्षा 1 से 12 तक के लिए समर्पित टीवी चैनल (DTH) जो शैक्षिक सामग्री प्रसारित करते हैं।
 - **दीक्षा (DIKSHA):** (नीचे देखें)
 - रेडियो, सामुदायिक रेडियो और पॉडकास्ट का उपयोग।
 - **स्वयं (SWAYAM):** मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOCs) प्लेटफॉर्म।
 - विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए विशेष ई-सामग्री।
- **उद्देश्य:** डिजिटल डिवाइड को पाटना और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सभी तक, विशेषकर दूरस्थ क्षेत्रों और सीमित इंटरनेट पहुंच वाले लोगों तक पहुंचाना।

4. दीक्षा (DIKSHA)

- **क्या है:** दीक्षा (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing) भारत का राष्ट्रीय डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर है जो स्कूली शिक्षा के लिए गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री प्रदान करता है। इसे "नेशनल टीचर प्लेटफॉर्म" के रूप में भी जाना जाता है।
- **उपयोगकर्ता:** शिक्षक, छात्र और माता-पिता।
- **विशेषताएं:**
 - क्यूआर कोड से युक्त डिजिटल पाठ्यपुस्तकें।
 - लगभग 18 भारतीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध।
 - पाठ योजनाएँ, वर्कशीट, गतिविधियाँ, अवधारणा वीडियो आदि।
- **उद्देश्य:** शिक्षकों को सशक्त बनाना और छात्रों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाना। यह पीएम ई-विद्या पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

5. अमृता (Amrita Virtual Interactive E-Learning World - A-VIEW)

- **क्या है:** अमृता विश्वविद्यालय (Amrita Vishwa Vidyapeetham) द्वारा विकसित A-VIEW (Amrita Virtual Interactive e-Learning World) एक पुरस्कार विजेता बहु-मॉडल, मल्टीमीडिया ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म है।
- **विशेषताएं:**
 - एक वर्चुअल क्लासरूम अनुभव प्रदान करता है जो वास्तविक कक्षा के समान होता है।
 - एक शिक्षक को एक साथ हजारों छात्रों को विभिन्न स्थानों पर पढ़ाने में सक्षम बनाता है।
 - यह उच्च शिक्षा और कौशल विकास के लिए भी उपयोग किया जाता है।
- **उद्देश्य:** दूरस्थ शिक्षा को प्रभावी बनाना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को व्यापक दर्शकों तक पहुंचाना, और डिजिटल सीखने के उपकरण प्रदान करना। अमृता लर्निंग एक कंप्यूटर-आधारित अनुकूली शिक्षण कार्यक्रम भी है जो अंग्रेजी और गणित में बच्चों के लिए इंटरैक्टिव दृश्य-श्रव्य शिक्षा प्रदान करता है।

ये सभी प्लेटफॉर्म और अवधारणाएँ शिक्षा के डिजिटलीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जिससे सीखना अधिक सुलभ, आकर्षक और प्रभावी बन रहा है।

15. **स्कूल पुस्तकालय** को "विद्यालय का हृदय" या "ज्ञान की प्रयोगशाला" कहा जाता है, स्कूल पुस्तकालय (School Library) एक ऐसा स्थान है जो किसी विद्यालय के भीतर स्थापित और संचालित होता है। यह एक भौतिक (किताबें, पत्रिकाएं) और डिजिटल (ई-बुक्स, ऑनलाइन संसाधन) सीखने का केंद्र होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करना और उनके सीखने के अनुभव को समृद्ध करना है।

स्कूल पुस्तकालय की मुख्य विशेषताएं और भूमिकाएं:

- **ज्ञान का भंडार:** यह विभिन्न विषयों पर पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, संदर्भ सामग्री (जैसे शब्दकोश, विश्वकोश), और मल्टीमीडिया संसाधनों (जैसे वीडियो, ऑडियो) का एक विशाल संग्रह प्रदान करता है।
- **सीखने का केंद्र:** यह छात्रों को अपने पाठ्यक्रम से संबंधित जानकारी खोजने, शोध करने और अपनी ज्ञान की प्यास बुझाने के लिए एक शांत और प्रेरक वातावरण प्रदान करता है।
- **पठन कौशल का विकास:** स्कूल पुस्तकालय छात्रों में पढ़ने की आदत विकसित करने और उन्हें विभिन्न प्रकार की साहित्यिक शैलियों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **शिक्षक एवं छात्र का सहयोगी:** पुस्तकालय शिक्षकों को अपने शिक्षण के लिए आवश्यक सामग्री और संसाधन उपलब्ध कराता है, जिससे वे अपने पाठों को अधिक प्रभावी ढंग से तैयार कर सकते हैं।
- **सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास:** यह छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अवधारणाओं से परिचित कराकर उनके समग्र सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास में योगदान देता है।

16. शाला सुरक्षा/सड़क सुरक्षा/आत्मा रक्षा क्या है? स्कूली सन्दर्भ में

विद्यालय के संदर्भ में शाला सुरक्षा, सड़क सुरक्षा और आत्मरक्षा तीनों ही छात्रों की समग्र सुरक्षा और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। आइए इन्हें एक-एक करके समझते हैं:

1. शाला सुरक्षा (School Safety)

शाला सुरक्षा का अर्थ है एक ऐसा वातावरण बनाना जहाँ छात्र और विद्यालय समुदाय (शिक्षक, कर्मचारी, अभिभावक) सभी प्रकार के खतरों और आपदाओं से सुरक्षित महसूस करें। इसमें प्राकृतिक आपदाएँ (जैसे भूकंप, बाढ़, आग) और मानव-जनित खतरे (जैसे हिंसा, धमकाना, दुर्घटनाएँ, महामारी) दोनों शामिल हैं।

मुख्य बिंदु:

- **आपदा प्रबंधन:** छात्रों और कर्मचारियों को भूकंप, आग या अन्य आपात स्थितियों के दौरान सुरक्षित रहने के तरीके सिखाना (जैसे मॉक ड्रिल)।
- **भौतिक सुरक्षा:** विद्यालय भवनों, खेल के मैदानों और उपकरणों का सुरक्षित रखरखाव; उचित प्रकाश व्यवस्था और निकासी मार्ग।
- **मनोवैज्ञानिक सुरक्षा:** एक ऐसा वातावरण बनाना जहाँ छात्र मानसिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें, जिसमें धमकाने (bullying) और उत्पीड़न (harassment) को रोकना शामिल है।
- **स्वच्छता और स्वास्थ्य:** स्वच्छ पेयजल, शौचालय और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना।
- **संकट प्रबंधन योजना:** आपात स्थितियों से निपटने के लिए स्पष्ट नीतियां और प्रक्रियाएं बनाना।

2. सड़क सुरक्षा (Road Safety)

सड़क सुरक्षा का अर्थ है छात्रों को सड़कों पर सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और व्यवहार सिखाना। चूंकि छात्र पैदल, साइकिल पर, स्कूल बस में या निजी वाहनों से स्कूल आते-जाते हैं, इसलिए उन्हें सड़क दुर्घटनाओं से बचाने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

मुख्य बिंदु:

- **यातायात नियमों की जानकारी:** छात्रों को ट्रैफिक लाइट, जेबरा क्रॉसिंग, सड़क संकेतों और पैदल चलने के नियमों (जैसे सड़क के बाईं ओर चलना) के बारे में सिखाना।
- **सुरक्षित व्यवहार:** सड़क पार करते समय दोनों तरफ देखना, दौड़ना नहीं, चलती गाड़ी से हाथ बाहर न निकालना।
- **वाहन सुरक्षा:** स्कूल बस में चढ़ते और उतरते समय सावधानी बरतना, सीट बेल्ट पहनना (यदि चार पहिये वाहन में हों), हेलमेट का उपयोग करना (यदि साइकिल या दोपहिया वाहन पर हों)।
- **जागरूकता अभियान:** छात्रों, अभिभावकों और चालकों को सड़क सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करना।
- **अभिभावकों की भूमिका:** अभिभावकों को बच्चों को सुरक्षित रूप से स्कूल छोड़ने और लेने के लिए प्रेरित करना।

3. आत्मरक्षा (Self-Defense)

आत्मरक्षा का अर्थ है छात्रों (विशेषकर लड़कियों) को शारीरिक और मानसिक रूप से खुद को संभावित खतरों, उत्पीड़न या हमलों से बचाने के लिए प्रशिक्षित करना। यह केवल शारीरिक तकनीकें सीखने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आत्मविश्वास, जागरूकता और संकट की स्थिति में सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना भी शामिल है।

मुख्य बिंदु:

- **जागरूकता और सतर्कता:** छात्रों को अपने आसपास के माहौल के प्रति जागरूक रहना सिखाना और संदिग्ध परिस्थितियों को पहचानना।
- **मौखिक आत्मरक्षा:** "ना" कहना, मदद के लिए चिल्लाना और स्थिति से बाहर निकलने के लिए मौखिक रूप से अपनी बात रखना सिखाना।
- **शारीरिक तकनीकें:** सरल और प्रभावी आत्मरक्षा तकनीकें सिखाना (जैसे किक, पंच, पकड़ से छूटना) जो छात्रों को शारीरिक हमले का सामना करने में मदद करें।

- **आत्मविश्वास निर्माण:** आत्मरक्षा प्रशिक्षण छात्रों के आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान को बढ़ाता है।
- **सीमाएँ निर्धारित करना:** उन्हें यह सिखाना कि अपनी व्यक्तिगत सीमाओं को कैसे पहचानें और उनका सम्मान करवाएं।
- **मदद मांगना:** उन्हें यह सिखाना कि जरूरत पड़ने पर विश्वसनीय वयस्कों या अधिकारियों से मदद कैसे मांगें।

इन तीनों पहलुओं को स्कूली पाठ्यक्रम और गतिविधियों में शामिल करना छात्रों को एक सुरक्षित और सशक्त भविष्य के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

17. ईको क्लब क्या है: एक पर्यावरणीय क्लब जो छात्रों को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जागरूक और सक्रिय बनाता है।

गतिविधियाँ: वृक्षारोपण, प्लास्टिक मुक्त अभियान, जल संरक्षण, पोस्टर प्रतियोगिता, रैलियाँ।

शैक्षिक महत्व: छात्रों में पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और टीम वर्क की भावना विकसित होती है।

18. शिक्षा के क्षेत्र में वार्षिक अकादमिक कैलेंडर में निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल होती हैं:

- | | |
|--------------------------------------|---|
| • स्कूल खुलने और बंद होने की तिथियाँ | • शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम |
| • राष्ट्रीय और स्थानीय अवकाश | • सह-पाठ्यक्रम एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ |
| • परीक्षाओं की तिथियाँ | • खेलकूद और वार्षिक उत्सव |
| • माता-पिता-अध्यापक बैठकें | • मूल्यांकन और रिपोर्ट कार्ड वितरण की तिथियाँ |

महत्व:

यह कैलेंडर विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासन को पूरे शैक्षणिक वर्ष की गतिविधियों की पूर्व जानकारी देकर **योजनाबद्ध, प्रभावी और समयबद्ध कार्य संचालन** में सहायता करता है। पीएम ई-विद्या (PM e-VIDYA) चैनल भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसे **शिक्षा मंत्रालय** ने **आत्मनिर्भर भारत अभियान** के तहत 17 मई, 2020 को शुरू किया था। इसका मुख्य उद्देश्य डिजिटल, ऑनलाइन और ऑन-एयर प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा तक बहु-स्तरीय पहुंच को सक्षम बनाना है, विशेष रूप से COVID-19 महामारी के मद्देनजर सीखने के नुकसान को कम करने के लिए।

19. विद्यालय में उपलब्ध खेल सामग्रियों का निरीक्षण करें।

20. उपचारात्मक शिक्षा (Remedial Teaching) एक विशेष शिक्षण पद्धति है जिसका उद्देश्य उन छात्रों की मदद करना है जो सामान्य कक्षा शिक्षण के दौरान किसी विशेष विषय, अवधारणा या कौशल में **कमजोरियों या कठिनाइयों का सामना कर रहे होते हैं**। यह एक तरह का "उपचार" है जो छात्रों की सीखने की समस्याओं का निदान करता है और फिर उन्हें दूर करने के लिए विशेष सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

- **अलग-अलग सीखने की गति:** हर छात्र की सीखने की गति अलग होती है। कुछ छात्र किसी विशेष विषय को धीमी गति से सीखते हैं।
- **अवधारणाओं को न समझना:** कभी-कभी छात्र किसी अवधारणा को ठीक से समझ नहीं पाते, जिससे उन्हें आगे के विषयों को समझने में दिक्कत आती है।
- **बुनियादी कौशल में कमी:** कुछ छात्रों में पढ़ने, लिखने, या गणित के बुनियादी कौशल ठीक से विकसित नहीं होते।
- **पिछड़ापन:** जब कोई छात्र अपनी कक्षा के औसत स्तर से पीछे रह जाता है।
- **गलत सीखने की आदतें:** कुछ छात्र गलत तरीके से सीखते हैं या उनकी सीखने की आदतें प्रभावी नहीं होतीं।

उपचारात्मक शिक्षा में क्या होता है?

उपचारात्मक शिक्षा में मुख्य रूप से ये चरण होते हैं:

1. **निदान (Diagnosis):** सबसे पहले, शिक्षक यह पता लगाता है कि छात्र को सीखने में कहाँ और क्यों कठिनाई आ रही है। इसके लिए विभिन्न परीक्षण, अवलोकन या बातचीत का उपयोग किया जाता है।
2. **योजना बनाना (Planning):** निदान के आधार पर, शिक्षक छात्र की विशिष्ट कमजोरियों को दूर करने के लिए एक व्यक्तिगत या छोटे समूह की शिक्षण योजना बनाता है।
3. **उपचार (Remediation):** इस चरण में, शिक्षक विशेष शिक्षण विधियों, सामग्री और तकनीकों का उपयोग करके छात्र को अतिरिक्त सहायता प्रदान करता है। इसमें दोहराव, सरल तरीके से समझाना, अतिरिक्त अभ्यास और विभिन्न प्रकार की शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग शामिल हो सकता है।
4. **मूल्यांकन (Evaluation):** यह जांचने के लिए कि उपचारात्मक शिक्षण कितना प्रभावी रहा, छात्र की प्रगति का नियमित रूप से मूल्यांकन किया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षा के उद्देश्य:

- छात्रों की **अधिगम संबंधी कठिनाइयों और त्रुटियों को दूर करना।**
- उन्हें उन अवधारणाओं को फिर से सिखाना जो उन्होंने सही ढंग से नहीं सीखी हैं।
- छात्रों के **आत्मविश्वास और प्रेरणा को बढ़ाना।**
- उन्हें अपनी सीखने की गति के अनुसार आगे बढ़ने में मदद करना।
- अप्रभावी सीखने की आदतों को खत्म करना।
- छात्रों को मुख्य शैक्षणिक कौशल (जैसे साक्षरता और संख्यात्मकता) में अपेक्षित दक्षता प्राप्त करने में मदद करना। संक्षेप में, उपचारात्मक शिक्षा एक **व्यक्तिगत और केंद्रित दृष्टिकोण** है जो छात्रों की सीखने की चुनौतियों को पहचानता है और उन्हें दूर करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त सहायता प्रदान करता है, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें और अपनी कक्षा के साथियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें।